Sumangalam Prabha
A peer reviewed (Refereed) & open access journal
RNI N0.- UPHIN/2009/31180
PP.No.: 15-19

ISSN: 2250-1894
Vol.-15, No.-IV, Issus-60
Year: Jan-Mar 2025

आस्था और अर्थव्यवस्था का संगम महाकुंभ

डॉ0 हरनाम सिंह
सहायक आचार्य– अर्थशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ0प्र0)

आस्था–विश्वास का सबसे बड़ा जनसैलाब और सामाजिक–सांस्कृतिक अवधारणाओं का जीवंत प्रतीक कुंभ भारत की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चेतना से जुड़ा है। कुंभ के पीछे आस्था और निष्ठा का जिवंत भाव कार्यशील रहाता है। यह 'स्व' से निकालकर खुले मैदान में, शीत की चिंता न करते हुए नदियों के तटों पर खींच लाती है। मौसम की कष्टपूर्ण परिस्थिति में भी लोगों को जीवन ध्येय के साथ ही जीवन जीने की सार्थकता का अनुभव होता है। सामाजिक–सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों के अवमूल्यन के माहौल में कुंभ सरीखे सांस्कृतिक उत्सवों की महती आवश्यकता प्रतीत होती है। भारत दर्शन के लिए जो लोग आना चाहते हैं उन्हें पूरे भारत की विविधता एक जगह सिमटी हुई मिल जाती है। जो आध्यात्मिक लाभ के लिए आना चाहते है उनके लिए तो इससे भव्य आयोजन कोई हो ही नहीं सकता। ऐसे अवसरों पर समाज और सरकार अपने जन–जागरण के कर्तव्यों को गहराई तक समझते हुए सोचें कि 'सुरसरि सम सबकर हित' करने वाली भावना का प्रचार–प्रसार कैसे हो? लोक–मंगल की भावना वाले कुंभ की सार्थकता तभी बढ़ सकती है जब देश के लोगों में सेवा धर्म, परोपकार और नैतिकता की भावना बढ़े और लोगों को दुख, दरिद्रता से मुक्ति मिले। कुंभ को देखने समझने के अलग–अलग दृष्टिकोण हैं । कुंभ सनातन संदेशों को संप्रेषित करने का एक महा आयोजन है । प्रश्न यह है कि हम भारतीय कुंभ के मंतव्य को लेकर कितने सजग हैं? जब पर्यावरण, जल, वायु, धरती और सभी खाद्य पदार्थ जहरीले होते जा रहें हो तो कुंभ महापर्व की भूमिका क्या हो ? डुबकी लगाने पुण्य कमाने की आपाधापी में कुम्भ के सामाजिक/सांस्कृतिक–आर्थिक सरोकार के बारे में सोचने के लिए हमारे पास कितना समय है ? कुम्भ में हम जिस अमरता की चाहत रहकर डुबकी लगाते हैं उसका स्वरूप क्या है? क्या कुंभ के वास्तविक स्वरूप से हमारा परिचय आज देश समाज के सामने खड़ी चुनौतियों का समाधान करने में सहायक हो सकता है ? भारत में कुंभ जहाँ सांस्कृतिक एकता और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के भाव बढ़ता है वही आर्थिक गतिविधियों का पोषक भी है। तत्व और विचार के संरक्षण और संवर्धन का माध्यम कुम्भ को बनाया गया है।

सनातन संवाद की संस्कृति– कुंभ संघर्ष समाधान की सनातन परंपरा है। वर्तमान दौर में कुंभ जैसे आयोजनों के मूल भाव को पुनर्जीवित किया जाना बहुत आवश्यक है क्योंकि कुंभ व्यवस्था व्यक्तिगत दृसामाजिक घटकों के बीच संवाद का एक वृहद पारंपरिक प्लेटफार्म रहा है। भारतीय संस्कृति संवाद से ही सत्य के उपलब्ध होने की बात करती है । आप अध्यात्म के सूत्रों को पहचान करना चाहते हैं अथवा एक बेहतर व्यवस्था का निर्माण करना चाहते हैं इसके लिए संवाद से बढ़कर कोई मानवीय और समग्र तरीका नहीं हो सकता। संवाद की अवधारणा के आधार पर ही लोकतांत्रिक मूल्य पनपते हैं और सहज लोकमानस भी बनता है। किसी भी समस्या से जुड़े सभी पक्षों की पहचान और समाधान के लिए अधिकतम सुझाव, संवाद की प्रक्रिया के द्वारा ही प्राप्त होता है। संवाद की अतिशय परंपरा को ध्यान में रखकर कुंभ संवाद की संस्थानिक स्वरूप है। नित नवीन और चिर पुरातन के बीच संतुलन बिंदुओं की खोज और उनकी साधने की प्रक्रिया में कुंभ जैसे आयोजनों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। जब हम परिवर्तन के दौर में जी रहे हैं तब संतुलन के नवीन सूत्रों की खोज अपेक्षाकृत अधिक आवश्यक हो गई हैं। कुंभ व्यवस्था को संवाद के प्लेटफार्म के मूल रूप में स्थापित करने में सफल हो जाते हैं, तो निश्चित रूप से सम्यक दिशा की ओर अग्रसर है । अपनी संस्कृतिक धारा को अक्षय बनाए रखने के लिए कुंभ जैसे वृहत्तर आयोजन के जरिए मूल्य और संवाद की संस्कृति को पुनः स्थापित किया जाना आवश्यक है । यदि ऐसा हो सके तो हम निश्चित रूप से सनातन संस्कृति को पोषित करने की स्थिति में होंगे, क्योंकि सनातन संस्कृति की अमरता की बूंदे साश्वत मूल्य और संवाद की संस्कृति से ही मिलती है। राग– विराग, प्राप्ति व परेशानी के चक्कर गिन्नी से निकल कर, एक जीवन से विरागी सन्यासी दूसरा गृहस्थ वृत्ति एक साथ होते हैं त्रिवेणी पर। अद्भुत संयोग जो सनातन समाज ने तय किए हैं जिसमें साधु, सन्यासी, बाल–वृद्ध, छोटे– बड़े सभी की कामनाओं के साथ एक जगह खड़े हो गंगा की धारा में अपने –अपने संकल्पों की अद्भुत परंपरा को चलाता है यही कुंभ है।

भारतीय संस्कृति/मान्यताओं को बढ़ाने का प्लेटफॉर्म– कुंभ आयोजन का महत्व केवल स्नान तक नहीं है, यह संवाद व चर्चा के लिहाज से भारतीय संस्कृति हिंदू धर्म की मान्यताओं को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सबसे बड़ा प्लेटफॉर्म है। बिना कोई निमंत्रण दिए, बिना किसी प्रलोभन के, कुंभ में इतने बड़े जनसैलाब का उमड़ आना, कड़ाके की ठंड में भी गंगा में डुबकी लगाना, साधु–संतों के ताप– त्याग को समझना, कुंभ के प्रति

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

भक्ति की भावनाओं को समझ पाना यह अंतरराष्ट्रीय मीडिया के लिए दूर की कौड़ी है। क्योंकि उनकी यहां ऐसा अद्भुत संगम ना तो कभी देखने को मिला है और ना ही कभी मिलेगा। यह संगम मात्र नदियों का नहीं है यह तो विचारों का है, मान्यताओं का है, आस्थाओं का है। सामान्य व्यक्ति से लेकर साधु –संतों और विभिन्न जाति, लिंग, आयु का संगम है। कुंभ मेला भारत की प्राचीन संस्कृति का प्रतीक है, वैश्विक स्तर पर कुंभ ने अपना परचम लहराया है। कुंभ के महत्व का अंदाजा इस बात से लगाना चाहिए कि यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के लिए कुंभ मेले को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की प्रतिनिधि सूची में शामिल किया है।

आध्यात्मिक व सांस्कृतिक धरोहर–पर्व–त्यौहारों के पीछे छिपे विज्ञान और संभावनाओं जो जीवन में लेकर आते हैं समझने की आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति के सभी पहलुओं को इस तरह से गढ़ा गया है कि ये हमें मुक्ति की तरफ ले जाएँ। मुक्ति क्या है? शायद हम समझ सकें कि जैसे जेल में वर्षों से कैद किसी कैदी की अचानक रिहाई उसकी दुनिया बदल देती है, उसे मिलती है एक नयी जमीन, एक नया आसमान। इसी तरह हम मानसिक स्तर पर भी कई तरह से कैद हैं। हमारे मन में नफरत, इर्ष्या, घृणा, कपट, डर, जैसी न जाने कितनी गांठें पड़ी हैं। कभी ऐसा होता है कि हम जिस शख्स से नफरत करते थे, उसे प्रेम करने करने लगते हैं और अचानक मन की कुछ गांठें खुल जाती हैं और एक सुकून भरा एहसास होता है–हृदय पटल विस्तार पाता है और जिंदगी थोड़ी सुहानी लगने लगती है। कर्म के स्तर पर भी कई तरह की गांठें पड़ी रहती हैं जिसे कार्मिक गांठ कहते हैं। कार्मिक गांठों ने मनुष्य जैसे एक असीम प्राणी को सीमाओं और सरहदों में बांध रखा है ᐧ ठीक वैसे ही जैसे किसी खुले आसमान के पक्षी को पिंजड़े में कैद कर दिया गया हो। इंसान के संपूर्ण जीवन की आकुलता व फड़फड़ाहट इन्हीं कार्मिक गांठों के पिंजड़े से बाहर निकलने की भी रहती है है। हमारी संस्कृति में मनाए जाने वाले सभी पर्व–त्यौहार हमें अपनी कार्मिक गांठों को खोलने या कम से कम ढ़ीला करने का एक अवसर प्रदान करते हैं। कुंभ का यह महापर्व एक ऐसा ही दुर्लभ अवसर है, जहां हम अपनी गांठों को विसर्जित करके मुक्ति की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

प्रयागराज महाकुंभ भारत की ग्लोबल ब्रांडिंग का माध्यम– प्रयागराज अस्थाई जिला की चकाचौंध देखकर कोई भी अंदाज़ा लगा सकता है कि इस पूरी व्यवस्था के लिए सरकार ने अरबों रुपए खंर्च किए है । प्रश्न उठता है आख़िर इतने बड़े आयोजन और ख़र्च के ज़रिए सरकार को क्या हासिल होता है? उसे कितनी आय होती है या फिर राजस्व के लिहाज़ से उसे कोई लाभ होता है या नहीं? सरकार को प्रत्यक्ष लाभ भले ही न हो लेकिन परोक्ष रूप से घाटे का सौदा तो नहीं होता होगा ᐧ भारतीय उद्योग परिसंघ यानी सीआईआई के अनुमान के मुताबिक 50 दिन तक चलने वाले इस मेले से राज्य सरकार को पिछले अर्ध कुम्भ में क़रीब एक लाख 20 हज़ार करोड़ रुपए का राजस्व मिला था ᐧ सरकार को यह आय दो तरह से होती है, एक तो प्राधिकरण की आय है और दूसरी जो कई तरीक़े से होते हुए राज्य के राजस्व खाते में जाती है ᐧ सीआईआई के अनुसार ष्प्राधिकरण मेला क्षेत्र में जो दुकानें आवंटित करता है, तमाम कार्यक्रमों की अनुमति दी जाती है, कुछ व्यापारिक क्षेत्रों का आवंटन किया जाता है, इन सबसे आय होती है ᐧ सीआईआई की रिपोर्ट के अनुसार मेले के आयोजन से जुड़े कार्यों में छह लाख से ज़्यादा कामगारों के लिए रोज़गार उत्पन्न हुए थे ᐧ रिपोर्ट में अलग–अलग मदों पर होने वाले राजस्व का आंकलन किया गया था जिसमें आतिथ्य क्षेत्र, एयरलाइंस, पर्यटन, इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों से होने वाली आय को शामिल किया गया ᐧ इन सबसे सरकारी एजेंसियों और व्यापारियों की कमाई बढ़ेगी 'कुंभ में जगह–जगह लक्ज़री टेंट, बड़ी कंपनियों के स्टॉल इत्यादि की वजह से भी आय की संभावना बढ़ गयी है'

आर्थिक क्रियाओं का प्रोतसाहन– उत्तर प्रदेश सरकार ने पिछले 50 दिनों के अर्धकुंभ मेले के लिए 4,200 करोड़ रुपये का आवंटन किया था, जो कि 2013 महाकुंभ मेले की तुलना में तीन गुना अधिक था। प्रयागराज में वर्तमान पूर्ण महाकुम्भ का आयोजन 13 जनवरी 2025 से 26 फरवरी 2025 के मध्य निर्धारित है। विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक समागम– महाकुम्भ–2025 के लिए उत्तर प्रदेश सरकार के अनुरोध पर केंद्र सरकार ने 2100 करोड़ रुपए की विशेष अनुदान सहायता राशि स्वीकृत की है। इसकी पहली किस्त के रूप में 1050 करोड़ रुपए निर्गत भी कर दिये हैं। उत्तर प्रदेश सरकार पहले ही 5435.68 करोड़ रुपए भव्य, दिव्य और डिजिटल महाकुम्भ के आयोजन पर खर्च कर रही है। सरकार द्वारा महाकुम्भ के लिए 421 परियोजनाओं पर यह धनराशि खर्च की जा रही है। प्रदेश सरकार की ओर से अबतक 3461.99 लाख की वित्तीय स्वीकृति निर्गत की जा चुकी है। इसके अतिरिक्त विभिन्न विभागों, जिसमें लोक निर्माण विभाग, आवास एवं शहरी नियोजन विभाग, सेतु निगम, पर्यटन विभाग, सिंचाई, नगर निगम प्रयागराज, द्वारा विभागीय बजट मद

ISSN: 2250-1894
Vol.-15, No.-IV, Issus-60
Year: Jan-Mar 2025

से 1636.00 करोड़ रुपए की 125 परियोजनाओं को क्रियान्वित कराया जा रहा है। 'प्रयागराज महाकुंभ–2025' न केवल उत्तर प्रदेश, बल्कि भारत की ग्लोबल ब्रांडिंग का माध्यम बनेगा। इसका ध्येय 'सर्वसिद्धिप्रदरू कुंभ' है जो विश्व का सबसे बड़ा 4,000 हेक्टेयर का श्टेंट सिटीश उत्तर प्रदेश (यूपी) में चल रहा है, जो कि प्रयागराज महाकुंभ 2025 में अनुमानित 400 मिलियन तीर्थयात्रियों की दुनिया की सबसे बड़ी सभा की मेजबानी करेगा। जनवरी–फरवरी 2025 में महाकुंभ के शुभ 45 दिनों के दौरान, अमेरिका और ब्रिटेन की संयुक्त आबादी के बराबर, 400 मिलियन लोगों का एकत्रीकरण, यूपी की वर्तमान जनसंख्या का 1.6 गुना होगा, जो 250 मिलियन आंकी गई है। यूपी सरकार के अनुसार, 67,000 स्ट्रीटलाइट्स से जगमगाते टेंट सिटी में पर्यटकों की सेवा के लिए 2,000 टेंट और 25,000 सार्वजनिक आवास शामिल होंगे।

यदी प्रश्न है कि इतना खर्च करने का क्या फायदा होगा? तो वास्तविकता यह भी है, कि भारतीय त्यौहार, कुम्भ और अन्य मेले भारत के ग्रामीण इलाकों और शहरों में आर्थिक क्रियाओं को प्रोतसाहित करतें हैं। बहुत बड़ी आबादी मेलों और त्यौहारों के आयोजन का बेसब्री से इंतज़ार करती रहती है। वैसे भी इस बार का महाकुम्भ सबसे अलग है जिसकी प्रयागराज 'सर्वसिद्धिप्रदरू कुंभ' के नाम से ब्रांडिंग की गई है। पिछले अर्ध कुम्भ में पन्द्र करोड़ से ज्यादा श्रद्धालु और 180 से ज्यादा देशों से लोग और देश के हर गांव से लोगो को बुलाया गया था । ध्यान रहें की अगर 400 मिलियन तीर्थयात्रियों आ रहे हैं, तो वे घूमेंगे भी, रहेंगे भी, खाएंगे –पीएंगे भी, अन्य खर्च भी करेंगे। इंडस्ट्री बॉडी कन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री (सीआईआई) के अनुसार पिछले अर्धकुम्भ के आयोजन से उत्तर प्रदेश के लिए 1.2 लाख करोड़ रुपये का राजस्व उत्पन्न हुआ था जो कुल खर्च का 30 गुना था। सीआईआई के अनुसार हॉस्पिटैलिटी सेक्टर में 2.5 लाख लोगों को रोजगार मिला तो एयरलाइन्स और एयरपोर्ट्स पर करीब1.5 लाख लोगों के लिए अवसर पैदा हुए। इसके अलावा टूर ऑपरेटर्स ने 45 हजार लोगों को काम पर रखा था। इको टूरिजम और मेडिकल टूरिजम में 85 हजार को रोजगार मिला था। टूर गाइड्स, टैक्सी ड्राइवर्स, उद्यमी सहित असंगठित क्षेत्र में 50 हजार नई नौकरियां उत्पन्न हुई थी।

महाकुंभ आर्थिक विकास का अवसर– महाकुंभ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह रोजगार और आर्थिक विकास का एक अभूतपूर्व अवसर रहा। अर्थव्यवस्था पर महाकुंभ का प्रभाव निर्विवाद है, क्योंकि प्रत्येक कुंभ मेला उत्सव राष्ट्रीय और राज्य दोनों अर्थव्यवस्थाओं को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा देता है। हर 12 साल में आयोजित होने वाला महाकुंभ अपने मेजबान शहर में लाखों तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को आकर्षित करता है। महाकुंभ जैसे आयोजन न केवल धार्मिक महत्व रखते हैं बल्कि आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और पर्यटन को भी बढ़ावा देते हैं, स्थानीय व्यवसायों को लाभ पहुँचाते हैं और भारत में समग्र आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रयागराज में संपन्न हुए महाकुम्भ से न केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर को सजीव किया, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाई पर ले जाने का मार्ग प्रशस्त किया। 45 दिन तक चले इस महाकुंभ से 2 लाख करोड़ रुपये का कारोबार होने का अनुमान है। साथ ही, देश की जीडीपी में भी इसका 0.03 फीसदी का योगदान होगा। ब्रोकरेज फर्म पीएल कैपिटल ग्रुप के मुताबिक, महाकुंभ मेले से जिन प्रमुख क्षेत्रों को बेनिफिट हुआ है, उनमें होटल, एयरलाइंस और रेलवे शामिल हैं। इस मेगा इवेंट से अनौपचारिक अर्थव्यवस्था को काफी हद तक फायदा हुआ। CAIT के मुताबिक, महाकुंभ में बड़ी मात्रा में आर्थिक और व्यापारिक गतिविधियां हुई। एक अनुमान के अनुसार अगर धार्मिक यात्रा के दौरान प्रति व्यक्ति 5,000 रुपये होता है, तो कुल आंकड़ा 2 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा हो जाएगा। ब्रोकरेज के अनुसार, अर्थव्यवस्था को 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक का बढ़ावा देने के साथ, महाकुंभ भारत में पर्यटन सेक्टर में क्रांति लाई है।

पर्यटन और रोजगार के अवसरों में वृद्धि– महाकुंभ भारत के धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करता है। संगम पर डुबकी लगाने के लिए आने वाले करोड़ों श्रद्धालु इस आयोजन को पवित्रता का प्रतीक मानते हैं। यह आयोजन स्थानीय कला, हस्तशिल्प, और देशी व्यंजनों को भी वैश्विक पहचान दिलाने का माध्यम बनता है। महाकुंभ के दौरान, कुंभ मेले में ठहरने की जगह की मांग बढ़ी। इस वृद्धि से होटल, रेस्तरां, परिवहन सेवाएँ और टूर प्रदाता लाभान्वित हुए हैं। कुंभ मेला टेंट बुकिंग जैसी सेवाओं की भी उच्च मांग देखी गयी, जो आगंतुकों को उत्सव स्थल के पास सुविधाजनक ठहरने व्यवस्था किये। पर्यटन उद्योग में हवाई यात्रा, रेल और सड़क परिवहन बुकिंग में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई, जिससे इन क्षेत्रों में राजस्व में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त, महाकुंभ सुरक्षा, निर्माण, स्वास्थ्य सेवाओं और इवेंट मैनेजमेंट की भूमिकाओं सहित कई अस्थायी और स्थायी नौकरियों का सृजन किये है। स्थानीय समुदायों को अत्यधिक लाभ होता है क्योंकि छोटे व्यवसायों और कारीगरों को अपने उत्पाद बेचने का एक शानदार अवसर मिलता है। तीर्थयात्री बड़ी मात्रा

में भोजन, धार्मिक वस्तुएँ, कपड़े और स्मृति चिन्ह खरीदते हैं, जिससे स्थानीय व्यापार को बढ़ावा मिलता है। यह वृद्धि न केवल व्यक्तिगत विक्रेताओं का समर्थन करती है, बल्कि क्षेत्रीय हस्तशिल्प, कला और व्यंजनों के लिए बाजार बनाकर स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी ऊपर उठाती है।

बुनियादी ढांचे का विकास और राजस्व सृजन– महाकुंभ के आयोजन से प्रयागराज में और उसके आसपास बुनियादी ढांचे में सुधार हुआ है। सड़कें, स्वास्थ्य सुविधाएँ, स्वच्छता, बिजली और जल आपूर्ति प्रणाली सभी को उन्नत किया गया, जिससे स्थानीय निवासियों और भावी पर्यटकों के लिए जीवन की गुणवत्ता में सुधार आएगा। ये उन्नयन शहर के बुनियादी ढांचे और विकास पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ते हैं। सरकार के राजस्व में पर्यटन और पार्किंग, टिकटिंग और स्टॉल किराए जैसे शुल्कों में वृद्धि से भी वृद्धि देखी जाती है, जो राज्य और केंद्र सरकार दोनों की पहलों को निधि देते हैं। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के आगमन से विदेशी मुद्रा में वृद्धि होती है, जिससे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को बल मिलता है।

कुम्भ से रोजगार सृजन और आर्थिक सशक्तिकरण– महाकुंभ मेला भारत की सांस्कृतिक और आर्थिक समृद्धि का प्रतीक है। महाकुंभ ने हमेशा से रोजगार सृजन में अहम भूमिका निभाई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसके लिए 5,500 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का शुभारंभ किया, जिसने शहर की आधारभूत संरचना को और सुदृढ़ बनाया । प्रयागराज की जिला नगरीय विकास अभिकरण (डूडा) इस बार 1100 से अधिक कुशल और अकुशल श्रमिकों को रोजगार प्रदान किया । इनमें ड्राइवर, हेल्पर, सुपरवाइजर, सफाई कर्मी, और कंप्यूटर ऑपरेटर शामिल हैं। इसके अलावा, श्रम विभाग ने 25,000 से अधिक श्रमिकों को कुंभ की तैयारियों में शामिल किया । भारतीय उद्योग परिसंघ (ब्प्) के अनुसार 2019 के कुंभ मेले से 1.2 लाख करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित हुआ था। इसी तरह 2013 के महाकुंभ से 12,000 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ था। इसके अतिरिक्त ब्प् का अनुमान है कि महाकुंभ मेले की आर्थिक गतिविधियों ने 2019 में छह लाख से अधिक लोगों के लिए रोजगार सृजित किया था। महाकुंभ केवल स्थानीय स्तर पर ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर भी गहरा प्रभाव डालता है। 2019 के कुंभ मेले ने 1.2 लाख करोड़ रुपये का राजस्व उत्पन्न किया था, और 2025 में इससे अधिक की उम्मीद है। ब्रांडिंग और मार्केटिंग पर 3,000 करोड़ रुपये खर्च करने की योजना थी, जो व्यापारिक लाभ को और बढ़ावा देगी।

महिलाओं के लिए रोजगार का सुनहरा मौका– महाकुंभ में महिलाओं को भी रोजगार के बड़े अवसर मिले हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और मध्य प्रदेश सहित अन्य राज्यों के 14,000 महिला स्वयं सहायता समूह पत्तल, दोना, कुल्हड़ और कपड़े के थैले बनाने में जुटे। यह काम सवा लाख महिलाओं को आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में आगे बढ़ाया है। महाकुंभ मेले के दौरान स्थानीय व्यवसायों को भी भारी प्रोत्साहन मिला। तीर्थयात्रियों की बढ़ती संख्या के कारण प्रयागराज में होटल, गेस्ट हाउस, और टेंट सेवाओं की मांग में तेज वृद्धि हुई। निषाद समुदाय युद्ध स्तर पर नाव निर्माण में लगा जिससे प्रशासन की 4,000 नावों की मांग पूरी हुई ।

कुम्भ संस्कृतियों का मिलन– आस्था, विश्वास, सौहार्द एवं संस्कृतियों के मिलन का पर्व है "महाकुम्भ" ज्ञान, चेतना का वो आयाम है जो आदि काल से ही हिन्दू धर्मावलम्बियों की जागृत चेतना को बिना किसी आमन्त्रण के खींच कर ले आता है। प्रयागराज में संपन्न हुए महाकुंभ पर लोकसभा में प्रधानमंत्री जी ने वक्तव्य देते हुए कहा कि महाकुंभ की सफलता में अनेक लोगों का योगदान है। जैसे गंगा जी को धरती पर लाने के लिए एक भागीरथ प्रयास लगा था। वैसा ही महाप्रयास इस महाकुंभ के भव्य आयोजन में भी हम सभी ने देखा है। पूरे विश्व ने महाकुंभ के रूप में भारत के विराट स्वरूप के दर्शन किए। सबका प्रयास का यही साक्षात स्वरूप है। महाकुंभ में राष्ट्रीय चेतना के जागरण के विराट दर्शन हुए हैं। यह जो राष्ट्रीय चेतना है, यह जो राष्ट्र को नए संकल्पों की तरफ ले जाती है, यह नए संकल्पों की सिद्धि के लिए प्रेरित करती है। महाकुंभ ने उन शंकाओं–आशंकाओं को भी उचित जवाब दिया है, जो हमारे सामर्थ्य को लेकर कुछ लोगों के मन में रहती है। करीब डेढ़ महीने तक महाकुंभ का उत्साह, उमंग को अनुभव किया गया । पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कारों के आगे बढ़ने का जो क्रम है, वह भी कितनी सहजता से आगे बढ़ रहा है। भारत का युवा अपनी परंपरा, अपनी आस्था, अपनी श्रद्धा को गर्व के साथ अपना रहा है। अपनी परंपराओं, आस्था, विरासत से जुड़ने की यह भावना आज के भारत की बहुत बड़ी पूंजी है। महाकुंभ ऐसा आयोजन रहा, जिसमें देश के हर क्षेत्र से, हर एक कोने से आए लोग एक हो गए, लोग अहम त्याग कर, वयम के भाव से, मैं नहीं, हम की भावना से प्रयागराज में जुटे। विश्वास है कि महाकुंभ से निकला अमृत संकल्पों की सिद्धि का बहुत ही मजबूत माध्यम बनेगा।

संगठनात्मक क्षमता और क्राउड मैनेजमेंटः सरकारी आंकणों के अनुससार लगभग कुम्भ में 62 करोड़ लोग पहुंचें जो ऐतिहासिक रूप से मनुष्यों का सबसे बड़ा जुटान रहा है। इतनी बड़ी संख्या में लोगों का प्रबंधन करना एक असाधारण चुनौती थी । परंतु भारत हर बार कुंभ या महाकुंभ के अवसर पर ऐसी चुनौती से पार पाने में सफल रहता है। कुछ लोग इसे उत्सव का अवसर मानते हैं । प्रदेश सरकार इतना बड़ा और वैश्विक महत्त्व का आयोजन सफलतापूर्वक करा लिया तो यह शासन व्यवस्था में समग्र सुधार और भीड़ प्रबंधण कि मिशाल है।

उपसंहार– कुंभ मेला हालांकि धार्मिक और आध्यात्मिक आयोजन है फिर भी यह आर्थिक क्रियाओं का संवाहक भी है। महाकुंभ भारत के सांस्कृतिक और धार्मिक पर्यटन को एक अंतरराष्ट्रीय मंच पर उभारा है। यह विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त आयोजन भारत की विरासत को उजागर कर, एक पर्यटन स्थल के रूप में इसकी अपील को बढ़ाता है और विदेशी निवेशकों को भी आकर्षित करता है। इसप्रकार महाकुंभ न केवल एक धार्मिक आयोजन बल्कि भारत के लिए एक आर्थिक संपत्ति के रूप में स्थापित है। कुम्भ–मेले सबको बिना भेदभाव के रोज़गार देते हैं। श्रद्धालु हिंदू प्रयागराज को सबसे पवित्र शहरों में से एक मानते हैं, जहां संगम में स्नान करने पर मान्यता है कि मोक्ष मिलता है। महाकुंभ 2025 को दिव्य महाकुंभ, भव्य महाकुंभ के साथ–साथ स्वच्छ महाकुंभ, सुरक्षित महाकुंभ, सुगम महाकुंभ, डिजिटल महाकुंभ, ग्रीन महाकुंभ की अवधारणा के रूप में विकसित किये जाने का लक्ष्य रहा है। यह कुंभ मानव–मात्र के जीवन में संभावनाओं के द्वार खोले इस कामना के साथ आइए हम अपनी संस्कृति के इस महापर्व कुम्भ के सन्देश को आत्मसात कर सशक्त–समृद्ध–समरस–विकसित भारत के निर्माण अपना योगदान करें।

*****